eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

जनपद देवरिया में जनसंख्या वृद्धि एवं भूमि उपयोग परिवर्तन

डॉ0 राज कुमार गुप्ता[1] एवं डॉ0 शिवेन्द्र प्रताप सिंह[2]

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, सन्त विनोवा पी0जी0 कालेज देवरिया, उ0प्र0।

[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, किसान पी0जी0 कालेज बहराइच उ0प्र0।

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

वर्तमान में जनसंख्या की बढ़ती आबादी के कारण संसाधनों पर उच्च दबाव पड़ रहा है। भूमि उपयोग परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्राकृतिक परिदृश्य को प्रत्यक्ष रूप से मानव प्रेरित भूमि उपयोग के लिए परिवर्तन कर दिया जाता है। भूमि एक ऐसी प्राकृतिक देन है जिसका निर्माण नहीं किया जा सकता है। जनपद देवरिया जनसंख्या वितरण एवं वृद्धि दर दोनों दृष्टि से उ0प्र0 का महत्वपूर्ण जनपद है। किसी भी क्षेत्र में भूमि उपयोग की उपयोगिता से क्षेत्र का आर्थिक भूदृश्य प्रभावित होता है। बढ़ती हुई जनसंख्या का भार भूमि उपयोग प्रतिरूप तकनीक तथा उसकी गहनता पर विशेष प्रभाव डालती है। जनपद में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में पिछले 15 वर्षों में 20.88 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है जबकि वन क्षेत्र लगभग स्थिर रहा है। परती भूमि में 0.17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। कृषि योग्य भूमि में कमी आयी है। देवरिया जनपद का सबसे महत्वपूर्ण भूमि उपयोग परिवर्तन पहलू यहां शुद्ध बोये गये क्षेत्र में कमी दर्ज होना है जो कि एक चिन्ताजनक स्थिति है। यहां द्विशस्यीय क्षेत्र में भी निरन्तर कमी आ रही है जो इस क्षेत्र के लोगों का कृषि के प्रति लगाव कम होना प्रदर्शित करता है।

मुख्य शब्द :– जनसंख्या वृद्धि, भूमि उपयोग, आर्थिक भूदृश्य, परती भूमि, कृषि योग्य भूमि, द्विशस्यीय क्षेत्र।

Introduction

तेजी से बढ़ती जनसंख्या और उसके परिणाम स्वरूप संसाधनों पर उच्च दबाव भूमि क्षेत्र के मौजूदा प्राकृतिक संसाधनों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। भूमि उपयोग परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्राकृतिक परिदृश्य को प्रत्यक्ष रूप से बस्तियों, वाणिज्यिक एवं आर्थिक उपयोग तथा वानिकी गतिविधियों जैसे मानव प्रेरित भूमि उपयोग के लिए परिवर्तन कर दिया जाता है। भूमि एक ऐसी प्राकृतिक देन है जिसका निर्माण नहीं किया जा सकता है। भोजन की मांग में लगातार वृद्धि के कारण, वन, झाड़ी और आर्द्र भूमि सहित गैर कृषि क्षेत्रों पर अतिक्रमण कर फसल का विस्तार किया गया है, विशेष रूप से निर्माण एवं ईंधन के लिए वानिकी संसाधनों के निरन्तर उपयोग के कारण वनों की सघनता में व्यापक कमी तथा कृषि उपकरणों के कारण कृषि योग्य भूमि का क्षरण हुआ है। भूमि उपयोग परिवर्तन वायुमण्डल में कार्बन–डाई–आक्साइड के संकेन्द्रक का एक कारक हो सकता है। इस प्रकार यह वैश्विक जलवायु परिवर्तन में भी योगदान देता है। IPBES के अनुसार विश्व में फिलहाल सभी प्राकृतिक, बर्फ रहित भूमि का 70 % से अधिक हिस्सा मानव उपयोग से प्रभावित है। FAO के अनुसार वर्ष 2050 तक वैश्विक रूप से खाद्य सम्बन्धी मांग को पूरा करने के लिए 500 मिलियन हेक्टेयर से अधिक नई कृषि क्षेत्र की आवश्यकता होगी। प्रस्तुत आलेख में निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए विभिन्न तथ्यों आंकड़ो तथा सूचनाओं को आधार बनाया गया है। इन तथ्यों का आधार प्राकृतिक व अप्रकाशित राजकीय एवं गैर राजकीय स्रोत है। वितरण प्रारूप तथा वृद्धि की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

अध्ययन क्षेत्र :– देवरिया पूर्वी उत्तरी प्रदेश का सीमान्त जनपद है। भौगोलिक दृष्टि से यह 26⁰6' से 27⁰8' उत्तरी अक्षांश तथा 83⁰29' से 84⁰26' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद देवरिया उत्तर में कुशीनगर पूर्व में गोपालगंज और सीवान (बिहार राज्य) दक्षिण में मऊ और बलिया तथा पश्चिम में गोरखपुर जनपद से घिरा है। घाघरा, राप्ती और छोटी गंडक इस जनपद की मुख्य नदियां है। अध्ययन क्षेत्र कुल क्षेत्रफल 2538 वर्ग किमी है। इसमें 5 तहसील, 16 विकास खण्ड एवं 176 न्याय पंचायत आते हैं। जनपद की कुल जनसंख्या 3100946 (2011) है जिसमें महिलाओं की संख्या 1563000 एवं पुरूषों की संख्या 1537000 है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल साक्षरता 73.53 % है।

देवरिया में जनसंख्या वितरण एवं वृद्धि :– किसी क्षेत्र के निवासी ही उसके वास्तविक धन होते हैं। यही लोग वास्तविक संसाधन है, जो क्षेत्र के अन्य संसाधनों का उपयोग करते हैं और नीतियां निर्धारित करते हैं। अंततः एक क्षेत्र की पहचान उसके लोगों से ही होती है। जनसंख्या वृद्धि का अभिप्राय किसी क्षेत्र में समय की किसी निश्चित अवधि के दौरान बसे हुए लोगों की संख्या में परिवर्तन से है। यह परिवर्तन धनात्मक भी हो सकता है और ऋणात्मक भी। देवरिया जनपद में 2011 की जनगणना में सबसे अधिक जनसंख्या गौरी बाजार, बैतालपुर एवं देवरिया सदर विकास खण्डों में एवं सबसे कम तरकुलवा, देसई, देवरिया एवं बरहज विकास खण्डों में थी। विकास खण्डवार अध्ययन करने पर पता चलता है कि 2001–2011 के दशक में सबसे अधिक वृद्धिदर सलेमपुर (21.82%), रूद्रपुर (21.03%) एवं बनकटा (20.06%) रही जबकि सबसे कम वृद्धिदर रामपुर कारखाना (–1.21%) देसई देवरिया (2.97%) एवं भाटपाररानी (5.93%) में थी। पिछले 20 वर्षों (1991 की जनगणना) में सबसे अधिक वृद्धि दर बनकटा (61%), बैतालपुर (51.92%) एवं रूद्रपुर (51.58%) में रही। वर्ष 1991–2011 के मध्य सबसे कम जनसंख्या वृद्धि देसई देवरिया (7.1%), रामपुर कारखाना (8.66%) अंकित किया गया है।

तालिका–1 जनसंख्या वितरण एवं जनसंख्या वृद्धि 1991, 2001, 2011

विकास खण्ड	जनसंख्या वितरण			जनसंख्या वृद्धि		
	1991	2001	2011	1991	2001	2011
गौरी बाजार	163932	207321	228051	23.76	26.47	10.00
बैतालपुर	144957	185599	220220	23.11	28.04	18.66
देसई देवरिया	112219	116743	120205	23.79	21.59	2.97
पथरदेवा	190227	151226	179518	28.50	29.39	18.71
रामपुर कारखाना	122489	134735	133102	26.41	24.95	1.21
देवरिया सदर	159875	199683	218243	23.91	24.90	9.29
रूद्रपुर	127550	159748	193349	21.41	25.24	21.03
भलुअनि	140643	169746	189354	24.98	20.69	11.55
बरहज	96810	117585	127240	18.73	21.46	8.21
भटनि	122493	149503	169652	21.27	22.05	13.48
भाटपार रानी	120379	147652	156402	18.42	22.66	5.93

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

बनकटा	116683	156549	187957	31.24	34.17	20.06
सलेमपुर	143107	177293	215977	23.76	23.89	21.82
भागलपुर	105645	126096	148419	17.05	19.36	17.70
लार	120500	144562	160299	19.77	19.97	10.89
तरकुलवा	—	101833	113684	—	24.84	11.64
जनपद देवरिया	1987509	2445874	2761692	39.12	24.48	12.91

स्रोत – भारतीय जनगणना 1991, 2001, 2011

देवरिया जनपद में जनसंख्या वृद्धि का भूमि उपयोग पर प्रभाव :– भूमि सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जिस पर सभी मानवीय गतिविधियां आधारित है, भूमि उपयोग प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक उपादानों के संयोग का प्रतिफल होता है जो आर्थिक क्रियाओं का आधार है। किसी भी क्षेत्र में भूमि उपयोग की उपयोगिता से क्षेत्र का आर्थिक भू–दृश्य प्रभावित होता है। बढ़ती हुई जनंसख्या का भार भूमि उपयोग प्रतिरूप, तकनीक तथा उनकी गहनता पर विशेष प्रभाव डालती है। देवरिया जनपद में भूमि उपयोग प्रारूप में सामयिक विभिन्नता के प्रदर्शनार्थ भूमि उपयोग परिवर्तन को 45 वर्षों (2000–2015) के सन्दर्भ में तथा मुख्य कारणों को व्याख्यायित किया गया है तथा इसे निम्न पांच वर्गों में विभाजित किया गया है :–
1–कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि, 2–वन क्षेत्र, 3–परती भूमि, 4–कृषि योग्य बेकार भूमि, 5–कृषिगत भूमि।
कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि एवं परिवर्तन :– इस वर्ग में उस भूमि को सम्मिलित किया गया है जो जुताई के अयोग्य हो इसलिए इसको कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि भी कहते हैं। इस कोटि की भूमि स्थायी रूप से कृषि हेतु अयोग्य होती है अर्थात् इसको शीघ्र कृषि कार्य में प्रयुक्त करना सम्भव नहीं होता है अतः इसके अन्तर्गत जलीय क्षेत्र, अधिवास, मार्ग, ऊसर भूमि, कब्रिस्तान, मरघट तथा अन्य भूमि को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि के अन्तर्गत 2014–15 में सम्पूर्ण जनपद का 13.39 प्रतिशत भूमि आता है। जनपद में विकास खण्डवार कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि का वितरण तालिका से स्पष्ट होता है जिसमें सर्वाधिक बरहज (22.46%) एवं सबसे कम तरकुलवा (7.4%) है। कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि में परिवर्तन से तात्पर्य इस प्रकार की भूमि के कमी या वृद्धि से है। जनपद में इस वर्ग में पिछले 15 वर्षों में 20.88 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी है। जिसका मुख्य कारण अधिवास, सड़कों तथा जलाशयों का निर्माण है। वर्ष 2000–2001 में इस वर्ग में 11.09 प्रतिशत भूमि भी जो 2014–15 में बढ़कर 13.39 प्रतिशत हो गयी है।
वन क्षेत्र एवं परिवर्तन :– जनपद में वन क्षेत्र के अन्तर्गत 2000–2001 में 261 हे0 भूमि जो सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 0.10 प्रतिशत है जबकि 2014–15 में भी 261 हे0 भूमि वन क्षेत्र के अन्तर्गत थी, अर्थात् विगत 15 वर्षों में यहां पर वन क्षेत्र में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ है अध्ययन क्षेत्र में 2014–15 में उच्चतम वन प्रतिशत रामपुर कारखाना विकास खण्ड एवं न्यूनतम देसई देवरिया, भागलपुर एवं सलेमपुर में है। विगत 15 वर्षों में पथर देवा, देसई, देवरिया एवं रामपुर कारखाना में वन क्षेत्र में कमी दर्ज की गयी है, शेष विकास खण्डों में वन क्षेत्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

परती भूमि एवं परिवर्तन :– यह वह भूमि है जिस पर पहले कृषि की जाती थी परन्तु अब इस भूमि पर कृषि नही की जा रही है। इस भूमि पर यदि निरन्तर कृषि की जाए तो भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है और ऐसी भूमि पर कृषि करना आर्थिक दृष्टि से लाभदायक नही रहता। अतः इसे कुछ समय के लिए खाली छोड़ दिया जाता है जिससे भूमि में फिर से उपजाऊ शक्ति आ जाती है और यह कृषि के लिए उपयुक्त होता है। 2000–2001 में जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 4.45 प्रतिशत परती भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित था जबकि 2014–2015 में जनपद में परती भूमि 4.62 प्रतिशत हो गयी इस प्रकार 0.17 प्रतिशत की मामूली वृद्धि दर्ज की गयी। 2000–2015 के मध्य परती भूमि में सबसे अधिक कमी देवरिया सदर (41.72%) दर्ज की गयी। अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश विकास खण्डों में परती भूमि के प्रतिशत में वृद्धि देखी गयी है। इसका प्रमुख कारण यह है कि देवरिया जनपद में लोगों का बाहर की ओर पलायन अधिक होता है साथ ही यहां सिंचाई साधनों का समुचित विकास न होने के कारण भागलपुर (36%), पथरदेवा (34.55%) एवं देसई देवरिया (20.15%) विकास खण्डों में परती भूमि में कमी आने की अपेक्षा वृद्धि हुई है।

तालिका–2 भूमि उपयोग का वितरण (2000–2015) प्रतिशत में

विकास खण्ड	कुल क्षेत्रफल	कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि		वन		कृषि योग्य बेकार भूमि		परती भूमि		शुद्ध बोया गया क्षेत्र		एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	
		2000	2015	2000	2015	2000	2015	2000	2015	2000	2015	2000	2015
गौरी बाजार	18301	7.95	10.51	0.05	0.05	3.6	1.93	3.5	3.8	84.75	83.1	53.99	57.5
बैतालपुर	16241	7.35	12.80	0.09	0.09	2.64	1.46	2.73	2.56	86.9	86.3	53.5	45.08
देसई देवरिया	13001	11.01	12.80	0.04	0.03	3.99	0.80	2.02	2.52	82.8	81.8	58.01	48.72
पथरदेवा	22577	11.77	15.38	0.16	0.15	2.96	5.47	6.40	5.47	78.3	78.9	52.9	50.2
रामपुर कारखाना	14175	10.24	13.11	0.45	0.40	3.94	1.89	4.67	4.7	80.5	75.7	20.0	16.0
देवरिया सदर	17043	8.65	10.56	0.07	0.07	3.26	1.84	4.2	2.4	83.7	83.3	59.00	62.2
रूद्रपुर	20775	13.36	16.62	0.04	0.04	1.43	1.11	5.6	5.9	78.9	75.6	41.09	50.9
भलुअनि	18286	9.58	13.12	0.06	0.06	1.17	1.4	4.5	6.0	83.3	79.0	48.3	79.3
बरहज	15707	16.28	22.46	0.11	0.13	1.1	3.00	5.7	7.44	72.9	66.2	33.95	48.08
भटनि	13958	10.71	14.17	0.18	0.20	1.79	2.09	4.5	6.1	81.9	66.5	41.4	56.0
भाटपार रानी	13139	10.11	15.01	0.06	0.07	2.29	2.6	2.5	3.1	84.3	78.9	42.9	66.2
बनकटा	14027	9.64	14.12	0.14	0.18	2.30	1.82	3.2	4.3	84.2	78.7	43.9	51.23
सलेमपुर	15261	11.40	13.52	0.03	0.03	2.12	1.19	4.1	4.81	82.1	80.0	38.2	36.39
भागलपुर	14452	12.01	14.95	0.03	0.03	2.1	1.09	2.3	3.3	82.8	79.8	69.8	53.61
लार	17950	10.52	14.21	0.05	0.05	3.6	7.78	7.3	7.4	67.9	70.0	38.04	52.00
तरकुलवा	9599	–	7.4	–	0.19	–	1.34	'–	5.4	–	85.0	–	26.06
जनपद देवरिया	249376	10.76	13.39	0.10	0.10	2.59	2.07	4.45	4.62	79.25	80.17	51.54	46.45

कृषि अयोग्य भूमि एवं परिवर्तन :– कृषित भूमि उपयोग के अन्तर्गत कृषि अयोग्य भूमि का अध्ययन अद्वितीय स्थान रखता है। क्योंकि इस वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित भूमि से कृषित भूमि में भावी विस्तार की सम्भावनाएं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

निहित रहती हैं। कृषि अयोग्य भूमि से आशय उस भूमि से है जो कृषि हेतु प्राप्त नहीं है किन्तु इसे अल्प लागत द्वारा कृषित भूमि में परिवर्तित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत बाग एवं झाड़िया, घास, चारागाह एवं अन्य भूमि को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत 2000–2001 में 2.59 प्रतिशत एवं 2014–15 में घटकर 2.07 प्रतिशत हो गया। विकास खण्डवार वितरण से स्पष्ट है कि इस प्रकार की भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत लार (7.45%) एवं पथर देवा (5.47%) पाया गया जबकि न्यूनतम देसई देवरिया (0.80%) भागलपुर (1.9%) एवं रूद्रपुर (1.11%) पाया गया। अयोग्य भूमि की अधिकता का प्रमुख कारण मिट्टी की उर्वराशक्ति, सिंचाई के साधनों का विकास, कृषित भूमि तथा सामाजिक एवं आर्थिक तत्व रहे हैं। विगत 15 वर्षों में कृषि योग्य बेकार भूमि सर्वाधिक वृद्धि बरहज (14.61%) लार (94.96%) एवं भटनि (7.56%) विकास खण्डों में हुई है जबकि 2000 से 2015 के मध्य न्यूनतम कमी देसई देवरिया (–80.53%), रामपुर कारखाना (52.95%) एवं पथरदेवा (58.35%) दर्ज किया गया।

शुद्ध बोया गया क्षेत्र एवं परिर्वतन :– वर्ष में फसलगत क्षेत्र को बोया गया शुद्ध क्षेत्र या शुद्ध कृषित भूमि कहते हैं। शुद्ध कृषित भूमि भू–उपयोग का महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं मानव के सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के स्तर की द्योतक है। सामान्यतः मानव कृषि कार्य से सम्बन्धित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषित भूमि के विस्तार के लिए सदैव प्रत्यत्नशील रहता है क्योंकि कृषित उत्पादन मुख्यतः इसी क्षेत्र पर निर्भर करता है। तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या को भोजन उपलब्ध कराने के लिए इस क्षेत्र में वृद्धि करना आवश्यक है। किन्तु अध्ययन क्षेत्र में सन् 2000 की अपेक्षा 2015 में 2639हे0 शुद्ध कृषित भूमि में कमी दर्ज की गयी है। विगत 15 वर्षों में केवल देसई देवरिया (5.02%) रामपुर कारखाना (2.89%) एवं सलेमपुर (0.25%) की वृद्धि दर्ज की गयी है शेष समस्त विकास खण्डों में ऋणात्मक वृद्धि दर रही है। शुद्ध बोये गये क्षेत्र में सर्वाधिक कमी पथरदेवा (22.84%), भटपाररानी (22.48%) एवं बनकटा (22.34%) दर्ज की गयी है। 2014–15 में सर्वाधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र बैतालपुर (86.27%), तरकुलवा (85.03%) एवं देवरिया सदर (83.32%) विकास खण्ड में रहा है। जबकि न्यूनतम प्रतिशत बरहज (66.24%) एवं भटनि (66.50%) में पाया गया है।

द्विशस्यीय क्षेत्र एवं परिवर्तन :– इस प्रकार के कृषित क्षेत्र में दो या दो से अधिक फसलें पैदा की जाती है।

तालिका–3 भूमि उपयोग परिवर्तन (2000–2015) प्रतिशत में

विकास खण्ड	कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि	वन	कृषि योग्य बेकार भूमि	परती भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र
	(2000–2015)	(2000–2015)	(2000–2015)	(2000–2015)	(2000–2015)	(2000–2015)
गौरी बाजार	–23.7	–	–49.61	–1.0	–8.72	–0.92
बैतालपुर	–22.94	–	–42.89	+3.15	+2.55	–13.01
देसई देवरिया	11.80	–16.66	–80.53	+20.15	–5.02	–19.21
पथरदेवा	–14.47	–31.57	–58.35	–34.55	–22.84	–27.44
रामपुर कारखाना	25.68	–9.2	–52.95	+5.73	+2.89	–13.02
देवरिया सदर	21.55	–	43.70	–41.72	–0.87	+5.00

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

रूद्रपुर	23.35	–	22.78	+5.25	–4.94	+22.79
भलुअनि	21.57	–	–11.62	+10.50	–15.92	+45.16
बरहज	29.39	–	+141.61	+13.42	–19.95	+24.80
भटनि	21.87	–	+7.56	+24.84	–13.91	+24.71
भाटपार रानी	21.87	–	–3.64	+3.8	–22.48	+27.75
बनकटा	21.5	–	–34.25	–14.86	–22.34	–3.05
सलेमपुर	22.00	–	–15.38	+19.26	+0.25	–1.98
भागलपुर	21.70	–	–49.01	+36.09	–5.83	–24.86
लार	21.70	–	+94.96	–8.14	–6.95	+23.19
तरकुलवा	–	–	–	–	–	–
जनपद देवरिया	**25.03**	**–**	**–19.74**	**3.39**	**–1.31**	**10.45**

पहले एक फसल पैदा करने के बाद दूसरे ऋतु में वह भूमि खाली छोड़ दिया जाता था जिससे मिट्टी में उत्पादकता संचित हो सके लेकिन सिंचाई के साधनों के विकास, विकसित कृषि तकनीक, उर्वरकों एवं कीटनाशकों का अधिक प्रयोग तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य पदार्थों की अधिक मांग के कारण इस विधि को तेजी से अपनाया गया है। जनपद देवरिया में 2000–01 में 51.54% द्विफसली कृषित भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित था जो 2014–15 में घटकर 46.45% रह गया है। 2014–15 में द्विफसली कृषित क्षेत्र का सर्वाधिक प्रतिशत भलुअनि (79.3%), भटपाररानी (66.2%) एवं देवरिया सदर (62.2%) में है जबकि न्यूनतम क्षेत्र रामपुर कारखाना (16.0%) तरकुलवा (26-06%) एवं सलेमपुर (36.39%) में पाया गया है। जबकि पिछले 15 वर्षों में औसत रूप से जनपद में 10.45% की वृद्धि दर्ज की गयी है किन्तु जनपद के देवरिया सदर, रूद्रपुर, भलुअनि, बरहज, भटनि एवं भटपाररानी विकास खण्ड को छोड़कर शेष समस्त विकासखण्डों में ऋणात्मक वृद्धि दर देखी गयी है। इसका प्रमुख कारण कृषि में लगने वाले श्रम, पूंजी एवं समय के सापेक्ष में होने वाली आय में कमी है क्योंकि आज कृषि एक घाटे का सौदा है जिससे लोगों का लगाव निरन्तर कम होता जा रहा है।

निष्कर्ष :– जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है जिससे खेतों का आकार छोटा होता जा रहा है परिणामस्वरूप लोग कृषि कार्य के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं की ओर उन्मुख हो रहे हैं। जनसंख्या वृद्धि में नियन्त्रण के लिए साक्षरता एवं सामाजिक जागरूकता होना अति आवश्यक है। लोगों को अधिक जनसंख्या के बारे में बताया जाना चाहिए कि इससे भविष्य में कौन–कौन सी समस्याएं आ सकती हैं। क्योंकि अधिक जनसंख्या होने से आवास, पानी, खाद्यान्न एवं रोजगार की आवश्यकता होगी किन्तु संसाधनों को उस अनुपात में नहीं बढ़ाया जा सकता है। इसलिए वर्तमान में हम सभी की यह जिम्मेदारी है कि हम बढ़ती जनसंख्या के सन्दर्भ में हो रहे भूमि उपयोग में परिवर्तन के प्रति सचेत एवं जागरूक रहे अन्यथा भविष्य में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जिसके लिए हमें अभी से नीतियों का निर्धारण करना चाहिए। अध्ययन क्षेत्र में लोगों का पलायन एक प्रवृत्ति रही है जिसके यहां भूमि उपयोग परिवर्तन अन्य क्षेत्रों से थोड़ा भिन्न है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

सन्दर्भ सूची–

1– जिला सांख्यिकीय पत्रिका–2000 एवं 2015

2– सिंह, रमेश कुमार (2008), भारत में भूमि सुधार कार्यक्रम का एक मूल्यांकन, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, वर्ष 54, अंक–5, पृ–37–40

3– रामा, प्रसाद एवं अन्य (2007), कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ–63–40

4– Sharma, S.K. and C.K. Jain (2007), Increasing Pressure of population and changes in land use in M.P., Geographical Review of India, Vol-54, PP, 41-58

5– पंडा, बी0पी0 : जनसंख्या भूगोल, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

6– तिवारी आर0सी0 एवं सिंह बी0एन0 : कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, प्रयागराज।

7– श्रीवास्तव, लोकेश व जाट, नीतू, 2006, जबलपुर नगर के भूमि उपयोग प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, अंक 42, संख्या 1 व 2, पेज संख्या 20–31

8– श्रीवास्तव, मधुलिका, 2009, जनपद महराजगंज में भूमि संसाधन उपयोग एवं ग्रामीण विकास, शोध ग्रंथ, भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखुपर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

9– Buck, J.K. 1937, Land Utilization of China, Nanking University Press.

10– Barlowe, R.and johnson, V.W. 1954. Land problem and policies, Mcgraw Hill Book Company, INC, New York, P.99.

11– Chatterjee, S.P. 1945. Land Utilization in the Disstrict 24-Parganas, Bangal B.C. Law Pt.2 Calcutta.

12– Coppock, J.T. 1964. An Agicultural Atlas of England and Wales, Faber and Faber, London.

13– Dayal, P. 1947. The Agricultural Geography of Bihar, London, Ph.D. Thesis.

14– Forest Survey of India, 2008-2009, Land Use Statistics, Ministry of Agricultural, GOI, Page 230, www.fci.org.in/cover_2011/uttarpradesh.pdf)

15– Jonce, W.D. and V.C. Finch, 1925. Detailed Field Mapping of an Agricultural Area, Annal Asso. American Geographer, p.15.

16– Kariel, H.G. and P.E., Kariel, 1961. Exploration in Social Geography, Welsley Publishing Company, p. 172.

17– Prasad, Puspa, 2006. Land Use Changing and Environmental Degradation in Dhanbad District : Geographical Study, Ph.D. Thesis, Department of Geography, BHU.

18– Rao, V.L.S.P., 1947. Soil Survey and Land use Aanlysis, Geographical Review of India.